श्री शत्रुंजय-मुक्ति · सा विद्या या विमुक्तये · सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ द्वितीय वर्ष-अभ्यास-८

ऐनरोलमेन्ट नंबर ________ शहर जाने- उत्तरपत्रिका 2020

विद्यार्थी का नाम ________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान		प्रश्न-२ एक ही शब्द में			
(१)	आत्मस्वरूप	(१)	प्रतिक्रमण	(५)	रचनाके
(२)	गौरवर्ण	(२)	बीज बुद्धि	(६)	वीणा
(३)	आनुपूर्वी नामकर्म	(३)	माहणसिंह	(७)	स्निग्ध
(४)	पुण्य पाप	(४)	स्वर्ग की अप्सराऐ	(८)	स्वयं का आयुष्य
(५)	पुष्कलावती	(५)	विजय	(९)	यह मै
(६)	देदिप्यमान	(६)	उदारता	(१०)	होते है
(७)	पराघातनामकर्म	(७)	सेवार्त	(११)	वारंवार
(८)	अप्रत्यख्यानावरणीय	(८)	सर्वविरति	(१२)	कामविकार
(९)	प्रमादाचरित	(९)	हरितगोत्र	(१३)	रात्री
(१०)	अस्थियाँ	(१०)	दृष्टिवाद	(१४)	वक्र
(११)	तिर्यग जृंभक व्यंतर	(११)	वप्र	(१५)	तिक्त रस
(१२)	सुधर्मास्वामी	(१२)	सादि संस्थान	(१६)	प्रकारो से
(१३)	प्रतिक्रमण	(१३)	अतिक्रमण	(१७)	ऐसे
(१४)	लघुस्पर्श	(१४)	अपध्यानाचरित अनर्थदंड	(१८)	काल
(१५)	देवकुरु	(१५)	वक्र गति में	(१९)	दुरभि
(१६)	पुण्य			(२०)	गीत सहित
(१७)	मृगशीर्ष				
(१८)	विहायोगति				
(१९)	अधिकरण				
(२०)	कीर्ति देवी				

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	कुब्ज
(२)	लोटकर
(३)	लब्धि
(४)	शीतस्पर्श

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	९	(६)	१०
(२)	८	(७)	३
(३)	१	(८)	७
(४)	६	(९)	४
(५)	२	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	२
(२)	2000
(३)	24
(४)	20
(५)	५२६ ९६
(६)	२८
(७)	१६
(८)	६
(९)	६८
(१०)	४६

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	१५
(२)	✓	(२)	५
(३)	×	(३)	२४
(४)	✓	(४)	११
(५)	✓	(५)	६
(६)	×	(६)	१८
(७)	✓	(७)	१३
(८)	×	(८)	१०
(९)	✓	(९)	१६
(१०)	×	(१०)	—

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	कुल गुण

रीमार्क ________ जांचनेवाले की सही ________

प्रश्न - ८

१. छह आवश्यकोंमें प्रतिक्रमण यह अति महत्व का आवश्यक है। इस आवश्यक के दरमियान श्रावक अपनेजीवन में लिये हुये व्रत और नियम - उसमें लगे हुये अतिचार और गलतियों को खोजता है, उन्हें अच्छी तरह याद करता है और गुरु को साक्षी रखकर मन, वचन और काया से क्षमायाचना करता है। प्रतिक्रमण की क्रिया ऑपरेशन जैसे होती है। श्रावक अपने जीवन में रहे हुये दोषों को खोज निकालता है। निकाल डालने के लिए क्षमा की साधना के साथ पुरुषार्थ करता है। प्रतिक्रमण से आत्मा जागृत होता है और निर्मल भी होता है। इस आवश्यक का मुख्य हेतु विश्वमैत्री और शुभभावना है।

२. अस्थि रचना की मजबूती और शिथिलता को संघयण कहते है और जिस कर्म के उदय से जो संघयण मिलता है वो संघयण नामकर्म होता है। जिस संघयण में मर्कट बंध की भाँति दो अस्थियाँ परस्पर आवेष्टित हो परंतु उसके उपर पाटे की भांति अस्थि न हो और कीलन हो, जिस कर्म के उदय से ऐसा संघयण मिलता है उसे नाराच संघयण नामकर्म कहते है। जिस संघयण में दो अस्थियों में एक तरफ ही मर्कटबंध हो दूसरी तरफ न हो उसे अर्धनाराच संघयण कहते है। जिस कर्म के उदय से ऐसा संघयण मिलता है, उस कर्म को अर्धनाराच संघयण नामकर्म कहते है।

३. अचलभ्राता गणधर को पुण्य व पाप के अस्तित्व के बारे में शंका थी। उसे ऐसा लगता था आत्मा सिवाय का पुण्य, पाप वगैरह अलग कुछ भी नहीं है। प्रभु ने मीठे अमृत वचन से ऐसे कहा की, "शुभकर्मो के द्वारा जीव पुण्यशाली होता है और अशुभकर्मोके कारण जीव पापी होता है। तथा तुझे प्रत्यक्ष देव नजर आ रहे है, तथा जगत में राजा, महाराजा, श्रेष्ठि ये सब सुखी है, वो सब पूर्व में किये पुण्य से ही, यह बात भी पुण्य के अस्तित्व को सिद्ध करती है, तथा जगत में बहुत सी आत्माये बहुत तरीके से दुःखी दिखती है, ये सब पूर्व में किये पाप से ही दुःखी हुये है, ये बात पाप के अस्तित्व को सिद्ध करती है।" इन मीठे वचन से उसका संशय दूर हुआ।

४. जीव अनेक बार जिसके साथ खुद का कुछ लेना-देना नहीं है, ऐसी प्रयोजन बिना की प्रवृत्ति करता है, इससे जो कर्म बंधे जाते है, उसका जो कटु परिणाम होता है, वो अनर्थदंड है। अनर्थदंड चार प्रकार से है - १) अपध्यानाचरित अनर्थदंड २) प्रमादाचरित ३) हिंसा प्रदान और ४) पापोपदेश अनर्थदंड। दुर्ध्यान याने बुरा ध्यान - आर्तध्यान-रौद्रध्यान। किसी के साथ कलह करने का ध्यान, वाद-विवाद करने का ध्यान, लड़ाई-झगडा करने का ध्यान, अबोले रहकर रोष करना, श्राप देना, गाली देना, कर्कश-खराब-अप्रिय-कडक बोलना, व्याकुल चित्त से चिंता करना ऐसे सब दुर्ध्यान करके आत्मा पापकर्म बाँधता रहता है और इस वजह से आत्मा दंडित होकर दुर्गति में दुःख, दर्द एवं दुर्भाग्य को पाती रहती है।

५. श्री शांतिनाथ भ के चरणोंमें वंदन करने के लिए आयी हुयी देवांगनाओमेंसे कितनीक बाँसुरी वगैरह शुषिर वाद्य बजाती है, कितनीक वीणा और चुटकी/टोल वगैरह बजाती है, कितनीक त्रिपुष्कर नामक वाद्य से मनोहर ऐसे शब्दों से मिश्रित हुये कान को समान करनेवाले शुद्ध षड्ज स्वर अथवा अधिक गुण युक्त, गायनयुक्त पैरों में पहने हुये जालबंध घुंघरुओंकी आवाज को कंकण, कटिमेखला, कलाप और नुपुर के मनोहर शब्दो में मिश्रित करके, हाव-भाव से अभिप्राय दर्शाने वाले, विलास के प्रकार जिसमें रहे हुये है ऐसे अंग विक्षेप से नृत्य कर रही है। इस तरह अपने अनेक कलाओद्वारा वो देवांगनाये भगवान की भक्ती कर रही है।